हैड : कानपुर के सर्वधर्म सम्मेलन में सार्वभौम मानव धर्म का प्रतिपादन

सब हैड

कानपुर में 23 अप्रैल को होगा अनोखा सम्मेलन

आएंगे निर्वासित तिब्बत सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री

कानपुरः पूरी मानव जाति का क्या एक ही धर्म हो सकता है? जिसमें कहीं भी कोई विरोध या द्वेष तक न हो? हर मान्यता का व्यक्ति जिसे **सहज** स्वीकार ले? कानपुर में 23 अप्रैल को होने वाले सर्व धर्म सम्मेलन में धर्म का ऐसा ही यूनिवर्सल मॉडल प्रस्तुत किया जायेगा।

कानपुर के करौली गांव स्थित लवकुशधाम आश्रम में होने वाले इस अनोखे सम्मेलन में तिब्बत की निर्वासित सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ सामदोंग रिंपोछे, **यू पी के पूर्व पुलिस डी.गी.पी सरदार कर्मवीर सिंह,** हरिद्वार के संत स्वतंत्रतानंद सहित अपने–अपने क्षेत्रों के दिग्गज भाग लेंगे। इस सम्मेलन की अवधारणा के पीछे मध्यस्थ दर्षन सह–अस्तितववाद के प्रणेता, प्रसिद्ध दार्शनिक श्री ए.नागराज हैं जिन्होंने 25 वर्षों तक (1950 से 1975) गहन साधना कर **सम्पुर्ण अस्तित्व, वास्तविकता को अनुभव किया, मानव के प्रयोजन को समझा,** मानवीय सूत्रों का अनुभव किया, तथा स्थिर मानवीय आचरण की पहचान कर सार्वभौम मानव धर्म **का स्वरुप** प्रस्तुत की है | वैसे पूर्व राष्ट्पति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम, **सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ** जस्टिस वेंकट चलैया, ट्रिपल आईटी हैदाराबाद के निदेशक डॉ राजीव सांगल इस अनुसंधान की प्रमाणिकता पर सहमति जता चुके हैं।

आयोजन के सूत्रधार और कई वर्षों से इस बाबत शोध कर रहे एचबीटीआई कानपुर में **प्रोफेस्सर** रहे गणेश बागड़िया के मुताबिक सम्मेलन में वास्तविकता जैसी है, उसका वैसा ही स्वरूप सबके सामने प्रस्तुत किया जायेगा। इससे हर व्यक्ति स्वयं भी धर्म की सही व्याख्या करने में सक्षम होगा। स्पष्ट किया जाएगा कि मानव के धर्म का मूल सुख है और कोई दुख की कल्पना भी नहीं करना चाहता। सम्मेलन का उद्देश्य है कि हर व्यक्ति के सामने सुख का स्वरूप स्पष्ट हो ताकि वह खुद अपनी जिंदगी को संवार सके।

आयोजन के सक्रिय सहभागी आईआईटी कानपुर में पीएचडी कर रहे कुमार संभव बताते हैं कि वास्तविकता सबके लिए एक जैसी ही है। नहीं समझ में आती तो सब अपने–अपने तर्क गढ़ लेते हैं, जो वाद–विवाद का कारण बनते हैं। इस सम्मेलन के बाद निश्चित ही मानवजाति को एक दिशा मिलेगी। **आयजकों ने स्वेच्छा पूर्वक आने वालों का स्वागत किया है | संपर्क:** 09907794154, वेब साईट: madhyasth.info |